ISSN 2395-031X

बुन्देली लोक-साहित्य एवं संस्कृति

डॉ. सरिता जैन

सहा. प्राध्यापक, हिन्दी

शास. स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

किसी भी राष्ट्र की प्राचीन परम्परा संस्कृति, धर्म आदि का वास्तविक स्वरूप लोक-साहित्य में प्राप्त होता है। संस्कृति, साहित्य एवं कला के मूल रूप तक पहुँचने का एक मात्र साधन लोक-साहित्य ही है। लोक-साहित्य तथा लोक-संस्कृति में गहनतम सम्बन्ध है। लोक-साहित्य के द्वारा लोक-संस्कृति के मूल तक पहुँचा जा सकता है। यद्यपि लोक-संस्कृति के रंग सदैव एक से नहीं रहे। प्रत्येक देश की संस्कृति का सच्चा स्वरूप वहाँ के लोक-साहित्य में ही देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द - संस्कृति, संसर्ग, विकृति, आध्यात्म।

लोक-साहित्य ही लोक-संस्कृति को पुष्ट करके पल्लवित करता है। लोक-संस्कृति भारतीय संस्कृति की जड़ है। भारत गांवों में बसता है और लोक भी गांवों में रचता बसता है। व्रत, मेले और पर्व संस्कृति के प्राण है। लोक पर्वो में वास्तविकता के साथ सामाजिकता के आदर्श है। लोक-संस्कृति में प्रकृति का सान्निध्य सदैव से रहा है। इसलिए पर्व प्रकृति से जुड़े है। उनमें ऋतुओं का संसर्ग है। बुन्देली जगत की लोक-परम्पराओं, लोक-गीतों, लोक कहावतों में हमें बुन्देलखण्ड के जीवन के बालक के पालने से लेकर उम्र ढलने के अन्दाज में खुशी और गम को बड़े ही सहज, सरल, रोमांचक और गूढ़ तथा दर्शन और आध्यात्म का आभास करा देने वाले गीत मिल जाते हैं। जिनमें बुन्देली जीवनशैली का बड़ी भावनात्मकता और मार्मिकता से चित्रण अभिव्यक्त हुआ है। लोक साहित्य की एक संशक्त पद्यात्मक विद्या लोकगीत है। गीत की परिभाषा देते हुए विद्वानों ने कहा कि व्यक्तिगत सुखों-दुखों की सहजानुभूति जब स्वयं द्रवीभूत होकर रागात्मक होती है, तब उसे गीत कहा जाता है।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में ''लोक हमारे जीवन का महा समुद्र है, उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। ....यही हमारे जीवन का आध्यात्मिक शास्त्र है। उसका कल्याण हमारी मुक्ति का द्वार है और निर्माण का रूप है। लोक, पृथ्वी एवं मानव इसी त्रिलोकी में जीवन का कल्याणतम रूप है।

लोक साहित्य में लोक गीतों का विशेष स्थान होता है। ये गीत व्यक्ति विशेष के न होकर समूह के होते

है। मनुष्य अपनी भावनाओं का उद्‌बोधन लोक-गीतों के द्वारा करता है उसमें दुख-सुख, दर्द और आनन्द के स्वर जीवित होते झंकृत होते हैं। डॉ. बलभद्र तिवारी कहते हैं - ''जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे जीवन में कोई न कोई संस्कार होते ही रहते हैं। इस अवसर पर स्त्रियाँ कोकिल कण्ठ से गीतों को गा-गाकर अपने हार्दिक उल्लास और आनन्द को प्रकट करती हैं। लोक-गीत लोक साहित्य की एक सशक्त पद्यात्मक विद्या है।

बुन्देलखण्ड के लोक-साहित्य में श्रृंगार की समृद्ध परम्परा है। बुन्दलेखण्ड की नारी अपने प्रिय के साथ इतनी तन्मय है कि उसे 'भुनसारे चिरैया' का बोलना प्रेम में व्यवधान उत्पन्न करता है। वह कुएँ पर, बाग में, चौपार में हर स्थान पर अपने प्रिय के साथ रहना चाहती है। वह ढिमरियाँ और मिलनियाँ बनने तक को तैयार है। वह कहती है -

''नजरियाँ मोई सों लगाइयों मोरे राजा।
कै मोरे राजा अँगना में कुअला खुदेओ ।
ढिमरिया मोई कों बनइयों मोरे राजा।।
नजरियाँ.....
कै मोरे राजा अँगना में बगिया लगइयो।
मलिनियाँ मोई कों बनइयों मोरे राजा।।
नजरियाँ.....
कै मोरे राजा अँगना में चौपर डरइयो।
बाजी मोई को जितइयो मोरे राजा।।
नजरियाँ.....

संस्कृति का अर्थ संस्कार सम्पन्न जीवन ही है। संस्कृति मानव जीवन को विकृति से बचाकर सुकृति की ओर अग्रसर करती है। अतः यह मानव की पथ प्रदर्शिका है मानव जीवन जिस प्रकार परिवर्तनशील है उसी प्रकार संस्कृति भी देशकाल के अनुसार परिवर्तित होकर मानव को उसकी उच्चादर्शो की प्राप्ति में योगदान देती है, जिस प्रकार मानव जीवन का क्षेत्र व्यापक एवं विविधता पूर्ण है उसी प्रकार संस्कृति भी मानवीय जीवन से सम्बद्ध समस्त भौतिक अभौतिक पक्षों का निकटता से संस्पर्श करती है। संस्कृति को विश्लेषित करने के लिए रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित ''संस्कृति के चार अध्याय'' की भूमिका में पण्डित जवाहरलाल नेहरू के वाक्य उल्लेखनीय है - ''संस्कृति है क्या ? संसार भर में जो सर्वोत्तम बाते जानी या कही गयी है उनसे अपने आप को परिचित करना ही संस्कृति है। संस्कृति शारीरिक या मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण दृढ़ीकरण या शुद्धि है। यह सभ्यता का भीतर से प्रकाशित हो उठना है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अनेक राष्ट्रों ने अपना कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व तथा अपने भीतर कुछ खास ढंग भौतिक गुण विकसित कर लिये हैं। संस्कृति मनुष्य के जीवन की प्रमुख वास्तविकता है, युगों-युगों से समाज को विकास की प्रेरणा देती हुई यह संस्कृति

ISSN 2395-051X

विचार कर्म और आचरण का यथार्थ है। समान्य से सामान्य व्यक्ति अपनी संस्कृति समझता है और उसके अनुसार आचरण करता है। संस्कृति सीखे हुये व्यवहारों की वह समग्रता है जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व पलता है और पशु स्तर से ऊँचा उठता है। संस्कृति की परिभाषा देते हुये प्रसिद्ध विज्ञानी ई.बी. टाइवर के कहा है- ''संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा ऐसी ही अन्य क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है। संस्कृति संस्कार की क्रिया है। यह अपने अमिधा में ही प्रयुक्त होती है। संस्कृति से तात्पर्य समाज और जीवन के सर्वांगीण संस्कार सुधार और विकास से है।

हमे सम्पूर्ण जीवन यात्रा की कथा लोक साहित्य में जिस ईमानदारी एवं सादगी के साथ व्यक्त होती है उतनी शिष्ट-साहित्य में मिलनी मुश्किल है। लोकगीत लोक मंगल के उजले दर्पण है जो मानव समाज एवं प्रकृति के नजदीक रहते है। डॉ. कुन्दनलाल उग्रेती का कथन है कि जब समस्त जनमानस में चेतन-अचेतन रूप में जो भावनाएँ गीतबद्ध होकर अभिव्यक्त होती है उन्हें लोकगीत कहते है। आदि मानव के हृदय से जो विकृत भावनाएँ निस्सृत हुई थी वे ही आगे चलकर लोकगीत के रूप में परिवर्तित हो गयी। लोकगीतों की एक लम्बी परम्परा चलती है । एक गीत लोकमानस से जब निकल जाता है, तो वह आगे पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है और माना जाता रहता है। वहकभी समाप्त नहीं होता। समय-समय के अनुसार उसमें घट-बढ़ जरूर हो सकती है। परन्तु उसकी मूल भावना वही रहती है और यदि मूल भावना भी कालान्तर में परिवर्तित हो जाये तो भी उसका प्रसंग या विषय वही रहता है। ये लोक गीत कालान्तर में भी समाप्त नहीं होते लम्बे समय तक जिन्दा रहते है चलते ही रहते हैं उसी स्फूर्ति और प्रेरणा और भावात्मता को अपने में समेटे हुए है। लोक-साहित्य का समृद्ध और सशक्त अंग लोक गीत है। इनमें एक विशाल संस्कृति का गर्वीला इतिहास अभिव्यक्त हुआ है। लोक गीतों में मानवीय समाज के क्रियाकलाप, भाव सौन्दर्य, कला सौन्दर्य आदि बातों का समावेश होता है। इसलिए बुन्देली लोक गीतों के वर्गीकरण से समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। डॉ. बलभद्र तिवारी ने बुन्देली लोक गीतों का विभाजन उनके वैशिष्ट्य के आधार पर किया है -ऋतु गीत तथा आख्यान गीत, आल्हा, कीर्तिक के गीत ढोला नाउ वर्मा सॉवरी कुवारों, पंडवा, सौरंगा, सदावक्ष, उत्सव और त्यौहार, रीति-रिवाज सम्बन्धी गीत, श्रम गीत, भिक्षावृत्ति के गीत, लोक नृत्य के साथ गाये जाने वाले गीत, यात्रा के समय के गीत

बुन्देली बोली की सरलीकरण और कोमलीकरण की प्रवृत्ति के कारण ही यहाँ के लोकगीतों में मधुरता, रसमयता और कोमलता प्रतीत होती है। भाषा को मधुर बनाने में यहाँ के ग्रामीण समाज का विशेष योगदान रहा है, लोकगीत तो यहाँ की ऐसी सम्पत्ति है, जिसमें भाषा का संपूर्ण और अक्षय भंडार भरा पड़ा है।

''कौन के अँगना बसुरिया लहर-लहर करै जू
कौन की नार गरभ में ललन करै जू

दशरथ के अँगना बसुरिया लहर-लहर करै जू
राम की नार गरभ में ललन ललन करै जू।''

बुन्देली लोक साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय विधा लोक कथा है। साहित्य की हर विधा में लोक कथा समावेश होता है। इसे भारत के कथाओं की जन्मभूमि कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। बुन्देलखण्ड के साहित्य ने समूचे देश के हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधित्व किया है। इस क्षेत्र के रचनाकारों ने बुन्देली साहित्य में भक्ति, शौर्य और श्रृंगार की त्रिवेणी प्रवाहित की है। बुन्देलखण्ड में शौर्य-गाथाओं की एक लम्बी परम्परा पायी जाती है।

सन्दर्भ -

1. हयारणा, श्री रामचरण 'मिश्र' बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य बुन्देलखंड प्रकाशन झाँसी 1976 पृ. 40
2. असद, अली, मध्यकालीन हिन्दी साहित्य पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव, मनीष प्रकाशन, भोपाल 1992 पृ. 14
3. तिवारी, कुन्दनलाल, लोक साहित्य के प्रतिमानक, सत्येन्द्र प्रकाशन इलाहाबाद 1983 पृ.212